Shri kuber ji ki aarti

Shri kuber ji ki aarti
ऊँजै यक्ष कुबेर हरे, स्वामी जै यक्ष जै यक्ष कुबेर हरे।
शरण पड़े भगतों केभगतों के, भण्डार कुबेर भरे।
॥ ऊँजै यक्ष कुबेर हरे…॥

शिव भक्तों में भक्त कुबेर बड़े, स्वामी भक्त कुबेर बड़े।े।
दैत्य दानव मानव से, कई-कई युद्ध लड़े ॥े॥

॥ ऊँजै यक्ष कुबेर हरे…॥

स्वर्ण सिंहासन बैठे
सिंहासन बैठे, सिर पर छत्र फिरेर पर छत्र फिरे, स्वामी सिर पर छत्र फिरे।
र पर छत्र फिरे।
योगिनी मंगल गावैंं
गल गावैं, सब जय जय कार करैं॥

॥ ऊँजै यक्ष कुबेर हरे…॥

गदा त्रिशूल हाथ मेंशूल हाथ में, शस्त्र बहुत धरे,स्वामी शस्त्र बहुत धरे।
दुख भय संकट मोचनंकट मोचन, धनुष टंकार करें॥ंकार करें॥

॥ ऊँजै यक्ष कुबेर हरे…॥

भांति भांति केव्यंजन बहुत बनें
जन बहुत बने, स्वामी व्यंजन बहुत बने।ंजन बहुत बने।
मोहन भोग लगावैं, साथ में उड़द चने॥द चने॥

॥ ऊँजै यक्ष कुबेर हरे…॥

बल बुद्धि विद्या दाता
द्या दाता, हम तेरी शरण पड़े, स्वामी हम तेरी शरण पड़े,
अपने भक्त जनों के, सारे काम संवारे॥ंवारे॥

॥ ऊँजै यक्ष कुबेर हरे…॥

मुकुट मणी की शोभा, मोतियन हार गलेयन हार गले, स्वामी मोतियन हार गले।यन हार गले।
अगर कपूर की बाती, घी की जोत जले॥

॥ ऊँजै यक्ष कुबेर हरे…॥

यक्ष कुबेर जी की आरती, जो कोई नर गावे,स्वामी जो कोई नर गावे ।
कहत प्रेमपाल स्वामी, मनवांछित फल पावे।
ल पावे।
॥ इति श्री कुबेर आरती ॥ श्री कुबेर आरती ॥